

अ ल ख

माता श्री रूपभवानी अलेखेश्वरी चालीसा



अ ल ख

माता श्री रूपभवानी अलखेश्वरी चालीसा

अलख-चालीसा

कौन जाने तेरा स्वभाव,
प्रभाव परमानंदा जी ।
जो समरे हृदय में पावे,
जैसे प्रभा भास्करा जी ।।

माता श्री रूपभवानी अलखेश्वरी

शारिका-स्वरूप माता रूप भवानी ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा 1677 ई० को दयदॅमर (सफाकदल)श्रीनगर के पंडित माधवजू धर के घर पुत्री रूप में अवतरित हुई। घर सुशिक्षित तथा प्रतिष्ठित होने के कारण रूप भवानी के संस्कार बहुत ही शुद्ध तथा पवित्र थे। बचपन मे ही आपके विचार निर्मल थे परन्तु सांसारिक विषयों के प्रति उदासीन रहती थीं। आपके पिता ने आपको आध्यात्मिक दीक्षा दी और वे ही आपके पहले गुरू बने।

माना जाता है कि स्वयम माता शारिका ने रूपा का रूप धारण किया था। आप प्रतिदिन प्रात: काल में माता शारिका के दर्शन हेतु हारी परबत जाती थी। बचपन में ही माता रूप भवानी को पिता के सान्निध्य मे अध्यात्मिक वातावरण

मिला।

माता रूप भवानी ने पहले चश्मा साहिबी में कुछ वर्ष तपस्या की और उसके बाद वोतशन पहुँची और वहां से मनिगाम में पहले लालचंद के घर रहीं और फिर अलग एक कुटिया में रहने लगीं। यहीं पर माता रूप भवानी ने एक अधजली चिनार की शाख को बहते देखा जिसको उठाकर माता ने उल्टा करके ज़मीन में बोया जो आगे चलकर एक बिशाल चिनार का वृक्ष बन गया। यहां माता अपनी तपस्या में इतनी मग्न रहती थीं कि बिना दूध लिए वह कुछ भी नहीं खाती थीं।

लालचंद जो गांव का नम्बरदार था, ने एक दिन यह जान लिया कि उनकी एक गैया रोज़ माता के पास जाकर उनको दूध देती रही हैं। तब जाकर लालचंद ने

वहां माता के लिए एक कुटिया बनवाई। फिर माता मनिगाम से लार चली आई और लार से वासकुर गयीं जहां उन्होने एक आश्रम बनवाया। पानी निकट न होने के कारण एक अन्धे मुस्लमान लड़के से कुआँ खुदवाया जिससे उसकी आँखों में दृष्टि लौट आई।

भक्तजन उन्हें रोफ रो'प भवानी और अलखेवरी के नाम से स्मरण करते हैं। रूपभवानी को संस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी का ज्ञान था। वेदांत, उपनिषद्, योग साधना तथा शैव-दर्शन का उनकी अमृतवाणी पर प्रभाव पड़ा है। उनकी यही अमृतवाणी "वाखों" और लोकों में उपलब्ध है। माता के चमत्कारों को देखकर उनकी प्रसिद्धि) सारे कश्मीर में फैल गयी।

आप 100 साल की आयु में सन् 1777 ई0 माघ कृष्णपक्ष सप्तमी के दिन ब्रह्मलीन हुई।

जय मां शरिके रूपभवानी।

जय जगदम्बे रूपभवानी ॥1॥

तन मन धन हम तुझ पर वारें।

तू भक्तन की भक्त तुम्हारे ॥2॥

संकट में हम सब की साथी।

ज्ञान ध्यान और योग की दाती ॥3॥

माता तुम सम और ना कोई।

जीवन का अब ठौर न कोई ॥4॥

अटल अटूट रहे विश्वासा ।

हारी पर्वत पर तेरा वासा ॥5॥

माधव ने जब ध्यान लगाया।

प्रसन्नचित हो रूप दिखाया ॥6॥

पुत्री रूप में तुझ को पा कर।

धन्य हुआ भक्त घर आ कर ॥7॥

ज्येष्ठ मॉस की पूरन मासी।

प्रकट हुई अविरल अविनाशी ॥8॥

बाल रूप धारण कर आई ।

घर परिवार की शान बढ़ाई ॥9॥

पिता प्यार ने पाठ पढ़ाया।

संतों का सान्निध्य सुहाया ॥10॥

लल्ल माधव को गुरू बताया।

गुरू शरण का भेद बताया॥11॥

माता गुरू बिन गति नाहि ॥

समझत जो सो तर जाहिं ॥12॥

सिंह वाहन पर तुझ को पाया ।

जब भी तूने रूप दिखाया ॥13॥

बालक पंडित पहुंचा घर पर ।

कर्म कांड भूला सब आ कर ॥14॥

तेरी शरण में आया अज्ञानी ।

रक्षा करो माँ रूप भवानी ॥15॥

रूदन सुना व्यथा जब जानी ।

पल भर में बन गया वह ज्ञानी ॥16॥

माता इस लीला को हम सब ।

शीश झुकाएं हो कर करबद्ध ॥17॥

घर संसार छोड़ जब आई ।

योग ध्यान की अलख जगाई ॥18॥

कृपा करो हम पर भी माता।

मोह माया का जाल न भाता ॥19॥

माता हुई जब वनवासी।

देख हैरान हुए सब वासी ॥20॥

मनीग्राम के सुंदर वन में।

माता बसी भक्तन के मन में ॥21॥

चमत्कार कर एक दिखाया।

गौ- माता ने दूध पिलाया ॥22॥

अन्नपूर्णा रूप जब भाया।

गाँव-गाँव तक अन्न पंहुचाया ॥23॥

उस पर पड़े ना विपदा भारी।

जिस पर रहे कृपा तुम्हारी ॥24॥

माता ऐसा रूप दिखाया।

लाल भक्त का घर बचाया ॥25॥

तू जो चाहे हो सकता है

सोना मोती बन सकता है ॥26॥

नरम पड़ा जब शाह अभिमानी।

तेरी महिमा उसने मानी॥27॥

वास्कुरा में तेरा वासा।

भक्त जनों की तू है आसा॥28॥

स्नेह-सिक्त लालह जब आया।

बालह-पुत्र का कष्ट सुनाया॥29॥

राज दरबार मे उसे बिठाया।

ज्ञान का ऐसा पाठ पढ़ाया॥30॥

ज्ञान चक्षु जब खोले माता।

ब्रहम– ज्ञानी कुछ बोल न पाता ॥31॥

नेत्रहीन को सौंपी ज्योति ।

लीला यह अद्भुत अनोखी ॥32॥

खुद का रूप पहचाना जिसने।

जन्म मरण मोह त्यागा उसने ॥33॥

पांच विकार बने जब बाधक।

मन कर्म ध्यान लगावै साधक॥34॥

मन कर्म वचन ध्यान जो लागे।

बैंकुठ वास करे दुःख भागे॥35॥

परमतत्व की कर बढाई।

ईश मिलन की राह समझाई॥36॥

हाथ उठा कर भक्त पुकारे।

दूरकरो सब कष्ट हमारे ॥37॥

माघ सप्तमी का दिन जब आया।

अंतर्ध्यान हुई महामाया ॥38॥

सौंप के तुम को जीवन सारा।

धन्य हुआ यह दास तुम्हारा ॥39॥

मां की कृपा रहे अपार।

पढ़े जो चालीसा बारम्बार॥40॥

जग जननी के सिमरन से सफल हो सारे काम।

हे मां अलखेश्वरी तुझे मेरा शत–शत प्रणाम

निःशुल्क वितरण हेतु

Published by :
Shree Mata Roop Bhawani Research Institute
E-mail : shreemataroopbhawaniresearch@gmail.com